सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 8 ● अंक: 333 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार, 13 जनवरी, 2023
मूल्य ₹ 3/-

कौआ और कोयल रंग में एक समान होते हैं। जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब बसंत ऋतु आती है तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है
-रहीम दास

उपेंद्र को उपमुख्यमंत्री न बनाने की... 2 | मुफ्ती या अब्दुल्ला परिवार कौन... 3 | 2024 में जनता करेगी बदलाव... 7

बर्फबारी से हिमाचल में ब्लैकआउट

» तीन नेशनल हाईवे समेत 200 सड़कों पर यातायात बंद, 487 ट्रांसफार्मर ठप

» शिमला में सीजन की पहली बर्फबारी से सैलानियों का उमड़ा सैलाब

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में मौसम ने फिर करवट ली है। राज्य की राजधानी शिमला, चंबा, कुल्लू, लाहौल-स्पीति, मंडी और किन्नौर के क्षेत्रों में भारी बर्फबारी से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। ताजा बर्फबारी से प्रदेश में तीन नेशनल हाईवे समेत 200 सड़कें बंद हो गई हैं। इन इलाकों के 487 बिजली ट्रांसफार्मर ठप हैं। जिससे कई क्षेत्रों में ब्लैकआउट छा गया है। प्रदेश के ऊंचाई वाले क्षेत्रों के न्यूनतम तापमान में कमी दर्ज हुई है। रोहतांग में अटल टनल से भी यातायात बंद कर दिया गया है।

राजधानी शिमला की सबसे ऊंची चोटी जाखू में आज तड़के सीजन की पहली बर्फबारी हुई है। जाखू की पहाड़ी बर्फ की चादर से सफेद हो गई है। शहर में हल्की बूंदाबांदी का दौर भी जारी है। कुफरी, नारकंडा, खड़ापत्थर और खिड़की में गुरुवार रात से ही बर्फबारी जारी है।

पुलिस ने जारी किया अलर्ट

राजधानी शिमला के ऊपरी इलाकों में बर्फबारी को लेकर पुलिस प्रशासन ने अलर्ट जारी किया है। पुलिस ने वाहन चालकों को हिदायत दी है कि बर्फबारी के बाद नारकंडा-बाघी-खदराला सड़क की स्थिति फिसलन भरी है। यह सड़कें वाहनों के लिए असुरक्षित हैं। सड़क जब तक साफ नहीं हो जाती तब तक इन मार्गों से यात्रा न करें। किसी भी आपात स्थिति में फंसते हैं तो दूरभाष नंबर 01772812344 और 112 या नजदीकी पुलिस स्टेशन पर संपर्क करें।

प्रशासन ने ऊपरी शिमला के लिए बसों की आवाजाही पूरी तरह बंद कर दी है। छोटे वाहनों की आवाजाही बर्फबारी के कारण फिसलन बढ़ने से प्रभावित हुई है। राजधानी शिमला में सीजन की पहली बर्फबारी को देखने के लिए सैलानियों का सैलाब उमड़ आया है। शहर के होटलों में एका-एक बुकिंग बढ़ गई है। प्रदेश के कारोबार में भी इजाफा हुआ है।

राज्य में बर्फबारी का अब तक का आंकड़ा

शहर	बर्फबारी
रोहतांग	24 इंच
मलाणा	12 इंच
चांशल	10 इंच
बड़ाभंगाल	10 इंच
चूड़धार	9 इंच
जलोड़ी जोत	8 इंच
शिकारी देवी	8 इंच
खजियार	5 इंच
खड़ापत्थर	2.5 इंच
भरमौर	2 इंच
नारकंडा	2 इंच
हरिपुरधार	2 इंच
कुफरी	1.5 इंच
छितकुल	1 इंच
डलहौजी	1 इंच

शिरडी जा रही श्रद्धालुओं की लग्जरी बस नासिक में टकराई, दस यात्रियों की मौत

» ट्रक से टक्कर में दर्जनों यात्री घायल, कई की हालत नाजुक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नासिक। महाराष्ट्र के नासिक में शुक्रवार सुबह भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां बस-ट्रक में टक्कर हो गई, जिससे 10 लोगों की मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों ने बताया, हादसे में कई लोग घायल भी हुए हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने नासिक-शिरडी हाईवे पर हुए बस हादसे की संबंधित अधिकारियों को जांच के आदेश दिए हैं और 5-5 लाख मुआवजा देने का ऐलान किया है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि श्रद्धालुओं से भरी एक निजी लग्जरी बस ठाणे जिले के अंबरनाथ से अहमदनगर जिले के शिरडी जा रही थी। इसी दौरान आज सुबह करीब साढ़े छह बजे नासिक की सिन्नार तहसील में पथारे के पास ट्रक से टकरा गई। जिसमे दस लोगों की मौत हो गई, मृतकों में सात महिलाएं, दो बच्चे और एक पुरुष शामिल हैं। घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारियों का कहना है कि घायलों में कुछ की हालत गंभीर बनी हुई है, ऐसे में मृतकों की संख्या बढ़ सकती है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि एक निजी लग्जरी बस ठाणे जिले के अंबरनाथ से अहमदनगर जिले के शिरडी जा रही थी। हादसा मुंबई से करीब 180 किलोमीटर दूर नासिक की सिन्नार तहसील में पठारे शिवर के पास सुबह करीब साढ़े छह बजे हुआ। मरने वालों में सात महिलाएं, दो बच्चे और एक पुरुष शामिल हैं। घायलों को सिन्नार के ग्रामीण अस्पताल और यशवंत अस्पताल ले जाया गया। कुछ घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

समाजवादी नेता शरद यादव का निधन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। वरिष्ठ समाजवादी नेता और जदयू के पूर्व अध्यक्ष शरद यादव का गुरुवार रात निधन हो गया। उन्होंने गुरुग्राम के एक निजी अस्पताल में अंतिम सांस ली। शरद यादव यादव 75 वर्ष के थे। पूर्व केंद्रीय मंत्री यादव के परिवार में उनकी पत्नी, एक बेटी और एक बेटा है। फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट ने बताया कि शरद यादव को अचेत अवस्था में आपातकालीन वार्ड में लाया गया था। जांच के दौरान उनकी नाड़ी नहीं चल रही थी। उपचार के दौरान गुरुवार रात 10.19 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। उनका पार्थिव शरीर दिल्ली के छतरपुर स्थित उनके निवास स्थान पर रखा गया, जहां लोग उनके अंतिम दर्शन कर सकेंगे। अंतिम संस्कार उनके पैतृक गांव में किया जाएगा। उनकी बेटी कांग्रेस नेता सुभाषिनी यादव ने फेसबुक-ट्विटर के जरिए इसकी पुष्टि की।

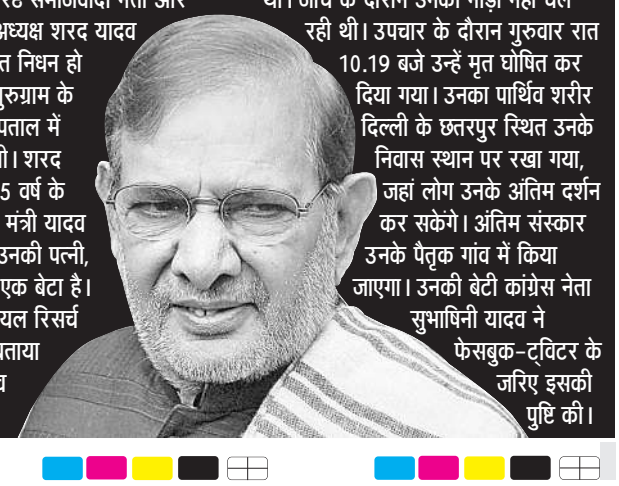

उपेंद्र को उपमुख्यमंत्री न बनाने की बात टाल गए सीएम नीतीश

» गठबंधन भी नहीं चाहता कुशवाहा बनें डिप्टी सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। तो अंततः उपेंद्र कुशवाहा को उप मुख्यमंत्री नहीं बनाने की बात मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने हंस हंस कर टाल दी। पर यह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को भी पता है कि उप मुख्यमंत्री बनने के इस मामले को इतनी आसानी से और बगैर प्रभाव के नहीं टाला जा सकता है। जिस तरह से उपेंद्र कुशवाहा के इच्छा का प्रतिफलन यह कहते हुआ कि सन्यासी तो नहीं है।

ऐसे में जदयू के संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा को किनारे लगा देना दल की सेहत के लिए भी ठीक नहीं लग रहा है । पहले से ऐसे ही जदयू के नेताओं के भीतर काफी अंतरद्वंद देखे जा सकते हैं। दरअसल उपेंद्र कुशवाहा को उप मुख्यमंत्री नहीं बनाने की एक बड़ी वजह जनता दल यूनाइटेड के

जदयू के विधायकों की संख्या आ रही है आड़े

विधायकों की संख्या भी रही होगी। बिहार विधानसभा में राजद के विधायकों की संख्या जहां 79 है वहीं जनता दल यू के विधायकों की संख्या मात्र 43 ही है। वैसे में कम विधायकों वाली पार्टी से मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री का गणित ठीक नहीं। सात दलों के महागठबंधन के भीतर संदेश अच्छा नहीं जाता। राजद का आंतरिक लोकतंत्र भी गड़बड़ा सकता था। राजद के भीतर तब एक दबाव पूर्ण राजनीति विकसित होने की आशंका थी। इसलिए भी उपेंद्र कुशवाहा का उप मुख्यमंत्री फिलहाल बनना संभव नहीं था। हां, अगर नीतीश कुमार अपनी कुर्सी तेजस्वी को सौंपते तो वे उपेंद्र कुशवाहा या फिर किसी और के लिए उप मुख्यमंत्री पद मांग सकते थे। जहां तक राज्य की वर्तमान राजनीति का तकाजा है तो इस माहौल में तेजस्वी कदापि नहीं चाहेंगे कि उनके बराबर आकर उपेंद्र कुशवाहा उप मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालें।

दही चूड़ा भोज में बीजेपी को कुशवाहा करेंगे आमंत्रित

डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव की देख रेख में 14 जनवरी को दही-चूड़ा भोज का आयोजन हो रहा है। दूसरी ओर जेडीयू संसदीय बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा भी दही-चूड़ा के भोज का आयोजन कर रहे हैं। सियासी गलियारे में इस बार दही-चूड़ा भोज के बहाने सियासी अटकलबाजी तेज हो गई है। बिहार की राजनीतिक गलियारों में कयासों का दौर जारी है। उपेन्द्र कुशवाहा ने महागठबंधन के सहयोगियों के साथ-साथ बीजेपी नेताओं को भी आमंत्रित किया है। उपेन्द्र कुशवाहा के अनुसार, दही-चूड़ा भोज के लिए कई दलों के नेताओं को निमंत्रण देना कोई नई बात नहीं है। बिहार के डिप्टी सीएम और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने भी बीजेपी नेताओं को निमंत्रण दिया है। मैं भी कई नेताओं को आमंत्रित कर रहा हूं। उनमें से कुछ बीजेपी के भी हो सकते हैं।

आजादी के 100वें साल में हम होंगे सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : राजनाथ

» बोले- मोदी के कार्यकाल में भारत जब बोलता है तो दुनिया कान लगाकर सुनती है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने कहा है कि भारत आज दुनिया की टॉप 5 अर्थव्यवस्था वाले देशों में खड़ा है। जिस तरह से पीएम मोदी कार्य कर रहे हैं, साल 2047 तक देश अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया के टॉप 3 देशों में शुमार होगे। आजादी के 100 साल पूरे होने तक भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा।

प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में भारत जब बोलता है तो दुनिया कान लगाकर सुनती है। यूक्रेन रूस युद्ध में भारतीय छात्रों को निकालने के लिये पीएम ने कुछ देर के लिये तो युद्ध भी रुकवा दिया था। उन्होंने कहा कि जिस समय मैं पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष था, तब चुनावी घोषणा पत्र तैयार करते समय नरेन्द्र मोदी ने मुझसे कहा कि हमें घोषणा पत्र में उन्हीं चीजों को शामिल करना चाहिए, जिन्हें हम पूरा सकें। साल 2019 के घोषणा पत्र में भी इस बात का ख्याल रखा गया। जो कहा वो पूरा किया, अब कॉमन सिविल कोड लागू करने पर काम किया जा रहा है। रक्षा मंत्री राजनाथ अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ के दो दिवसीय दौरे पर आए हुए थे।

शिक्षक और स्नातक खंड चुनाव के लिए कांग्रेस जल्द फाइनल करेगी नाम : खाबरी

» कहा- क्रूज में क्या मजदूर व बेरोजगार भी जाएगा और क्या उससे महंगाई कम होगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लखनऊ में शिक्षक और स्नातक खंड के चुनाव के लिए बीजेपी और सपा मैदान में हैं। दोनों पार्टियों ने अपने प्रत्याशियों के नामांकन भी करा दिए हैं। इस बीच उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बृजलाल खाबरी ने कहा कि शिक्षक और स्नातक खंड चुनाव के लिए हमारे पास कैंडिडेट भी हैं और हमारी तैयारी भी है। हम जल्द उनके नाम सामने लाएंगे।

उन्होंने कहा कि ये चुनाव सिंबल पर नहीं होता है, पार्टी दावेदारों को सपोर्ट करती हैं, पहले भी कांग्रेस सपोर्ट करती रही है, ये हमारी रणनीति का एक हिस्सा है, हम

प्रैक्टिकल करके देख रहे है, इस प्रैक्टिकल से सफलता मिलती है तो आगे भी देखेंगे, खाबरी ने कहा कि हमारे जो कैंडिडेट होंगे, वो निश्चित तौर पर जीतकर आएंगे। वहीं वाराणसी में क्रूज के उद्घाटन को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बृजलाल खाबरी ने केंद्र सरकार पर हमला बोला है, उन्होंने कहा, क्रूज में क्या मजदूर जाएगा, बेरोजगार जाएगा, क्या उससे महंगाई कम होगी।

शिवसेना के मुखपत्र सामना में राज्यसभा सांसद संजय राउत ने कसा तंज

तमिलनाडु के राज्यपाल सूट-बूट वाले कोश्यारी

» कहा-राजभवनों को भाजपा के लोगों ने अपना कार्यालय बना लिया है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तमिलनाडु में स्टालिन बनाम राज्यपाल रवि विवाद अब राष्ट्रपति तक पहुंच गया है। इस बीच संजय राउत ने शिवसेना के मुखपत्र सामना में तंज कसा है। उन्होंने कहा कि देश के आधा दर्जन राज्यों में सरकार बनाम राज्यपाल का टकराव बढ़ गया है और यह सभी गैर-भाजपा शासित राज्य हैं। उन्होंने कहा कि राजभवनों को भाजपा के लोगों ने अपना कार्यालय बना लिया है और वे सरकार पर नियंत्रण रखने की कोशिश कर रहे हैं।

सामना में उन्होंने कहा, तमिलनाडु में भी राज्यपाल विरुद्ध सरकार का संघर्ष छिड़ा हुआ है। तमिलनाडु के राज्यपाल रवि सूट-बूट वाले

भगतसिंह कोश्यारी हैं। जो महाराष्ट्र में चल रहा है, वही दूसरे रूप में तमिलनाडु में दिखाई दे रहा है। फर्क सिर्फ इतना है कि महाराष्ट्र में राज्यपाल द्वारा छत्रपति शिवाजी का अपमान किए जाने के बाद भी सरकार व मुख्यमंत्री चुप्पी साधे हुए हैं, लेकिन तमिलनाडु में राज्यपाल द्वारा रामासामी पेरियार, डॉ. आंबेडकर, करुणानिधि जैसे महापुरुषों का अपमान करते ही मुख्यमंत्री स्टालिन ने विधानसभा में ही राज्यपाल के सामने स्वाभिमानी तेवर दिखाया, वह काबिलेतारीफ है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने राज्यपाल से संघर्ष किया और तमिल अस्मिता के लिए केंद्र से पंगा भी ले लिया।

तड़तड़ाते थे महाराष्ट्र के राज्यपाल

राउत ने आगे कहा, महाराष्ट्र में 'ठाकरे सरकार' के समय मौजूदा राज्यपाल खौलते तेल में पापड़ की तरह तड़तड़ाते थे। सरकार के कई फैसलों पर आपत्ति जताते हुए मुख्यमंत्री को पत्र के माध्यम से मार्गदर्शन करते थे। सरकारी फैसलों और सिफारिशों को टाल देते थे। उन्होंने विधान परिषद के 12 मनोनीत सदस्यों की नियुक्ति को भी लटकाकर रखा। लेकिन जैसे ही राज्य में सत्ता परिवर्तन हुआ, वे तड़तड़ाने वाले राज्यपाल कहीं दिखाई नहीं देते। राज्यपाल की अब ठंडी कुल्फी बन गई है।

आओ करें मन की बात...

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

सीएम सुक्खू को मिली जान से मारने की धमकी

» भारत जोड़ो यात्रा का समर्थन न करने की दी गयी सलाह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

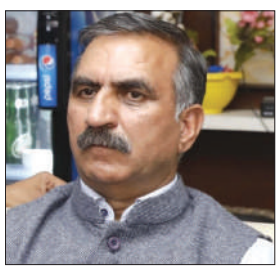

शिमला। खालिस्तानी आतंकी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू को धमकी दी है। पन्नू ने सीएम सुक्खू को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा का समर्थन ना करने की सलाह दी है। पन्नू की मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू को गीदड़ भभकी देते हुए भारत जोड़ो यात्रा का समर्थन करने पर जान से मारने की धमकी दी है।

पन्नू ने कहा कि राहुल गांधी 1984 नरसंहार अपराधियों का संरक्षण कर रहे हैं। पन्नू ने कमलनाथ और जगदीश टाइटलर के संरक्षण की बात कही है। सिख फॉर जस्टिस प्रमुख पन्नू इससे पहले पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को भी देता रहा है। गुरपतवंत सिंह पन्नू ने एक लेटर जारी करके यह धमकी हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री को दी है। इससे पहले भी पन्नू इस तरह के लेटर जारी कर चुका है, उसने पूर्व सीएम जयराम को ऐसा ही लेटर भेजा था।

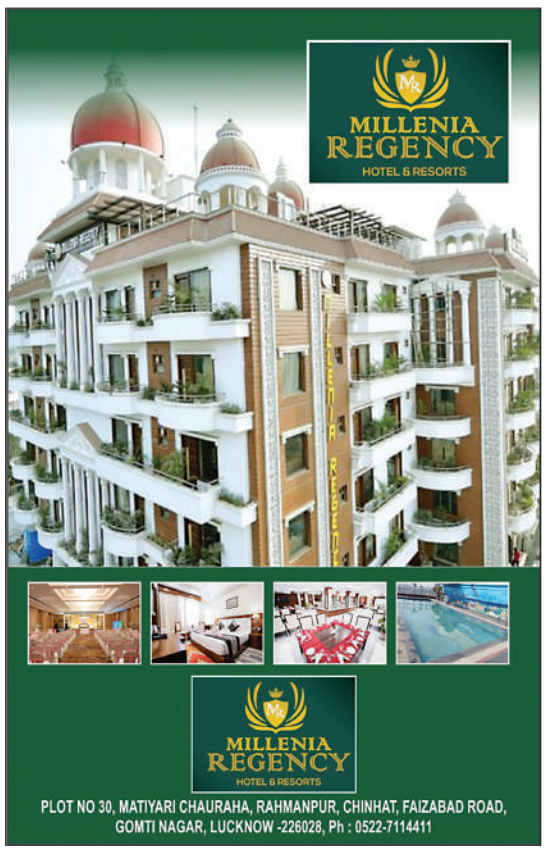

मुफ्ती या अब्दुल्ला परिवार कौन होगा जम्मू-कश्मीर में सियासत का सरताज!

» जनाधार को लेकर बेचैन हैं दोनों दल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में अपने कुशल प्रशासन व जनता के बीच गहरी पैठ की वजह सबके लोकप्रिय रहे पूर्व सीएम मुफ्ती मोहम्मद सईद की पार्टी पीडीपी का जनाधार अब खत्म हो रहा है क्या! ऐसी चर्चा राज्य के राजनीतिक गलियारों में हो रही है। धारा 370 को हटाने के बाद गृहमंत्रालय ने वहां पर चुनावी प्रक्रिया को भी रद्द कर दिया था। उसके बाद राज्य को बांटकर केंद्र शासित प्रदेश बना दिया था। पर अब तीन साल बाद फिर वहां चुनावी प्रक्रिया शुरू होने वाली है। जबसे वहां पर चुनाव करवाने की सुगबुगाहट हो रही तबसे बीजेपी, नेशनल कांफ्रेंस, पीडीपी, नई बनी गुलाम नबी आजाद की पार्टी डेमोक्रटिक आजाद पार्टी समेत राज्य के छोटे-मोटे दल भी तैयारी में जुटने लगे हैं। पर यहां सभी पार्टियों की बजाए बात अभी महबूबा व अब्दुल्ला की होगी।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम मुफ्ती मोहम्मद सईद के इंतकाल के 6 बरस बाद महबूबा मुफ्ती फिलहाल पीडीपी की अध्यक्षा हैं। महबूबा ने अनुच्छेद 370 के अंत के बाद गुपकार गठबंधन बनाया था, लेकिन मतभेदों के कारण उसका वजूद खत्म हो गया। वहीं जो नेता मुफ्ती मोहम्मद सईद के जमाने में पीडीपी के सबसे बड़े चेहरे थे, वो अब महबूबा से किनारा कर चुके है। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री, देश के पूर्व गृहमंत्री और पीपल्स डेमाक्रेटिक पार्टी के संस्थापक मुफ्ती मोहम्मद सईद का इंतकाल हुए 7 जनवरी को 6 साल पूरे हो गए। कभी श्रीनगर की गुपकार रोड से दिल्ली के राजपथ तक जो मुफ्ती मोहम्मद सईद अपनी राजनीति का लोहा मनवाया करते थे। आज कश्मीर उनकी पार्टी पीडीपी की कमान उनकी बेटी महबूबा मुफ्ती के हाथ में है। महबूबा मुफ्ती फिलहाल पीडीपी की अध्यक्ष हैं, लेकिन जम्मू-कश्मीर की सियासत को जानने वाले तमाम लोग ये मानते हैं कि कश्मीर की आवाम के बीच महबूबा मुफ्ती पर भरोसा कम हुआ है। साथ ही महबूबा अब ऐसी स्थितियों में नहीं दिखतीं कि वह खुद राज्य की सरपरस्त बन सकें या किसी को बनवा सकें। 7 जनवरी 2016 को दिल्ली के ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में अंतिम सांस लेने वाले मुफ्ती मोहम्मद सईद, जिस रोज़ दुनिया से विदा हुए उस रोज़ तक उनका ओहदा जम्मू-कश्मीर के वज़ीर-ए-आला (मुख्यमंत्री) का था। मुफ्ती मोहम्मद सईद के इंतकाल के बाद जम्मू-कश्मीर की कमान उनकी बेटी महबूबा को मिली। लेकिन मुफ्ती मोहम्मद के जाने के 6 बरस बात उनकी पीडीपी कहां पहुंच गई, वो साफ दिखने लगा है। मुफ्ती मोहम्मद सईद के जमाने में पीडीपी के पावरफुल चेहरे रहे तमाम नेता पार्टी छोड़ चुके हैं।

पीडीपी से ज्यादा मजबूत है नेशनल कान्फ्रेंस

वहीं फारुक अब्दुल्ला दोनों धड़ों में हैं। वो पक्के हिंदुस्तानी भी हैं और कश्मीरियों के अपने भी। ऐसे में जम्मू-कश्मीर में बीजेपी या कांग्रेस दोनों संग सरकार बनाना फारुक के लिए सहज है। महबूबा के लिए ये विकल्प सिर्फ कांग्रेस तक सीमित है। महबूबा मुफ्ती को कश्मीर में बिल्कुल अप्रासंगिक नहीं कहा जा सकता। ये बात जरूर है कि उनके जनाधार और राजनीतिक विकल्पों में कटौती हो गई है। फिलहाल महबूबा के पास दिल्ली में कोई सांसद नहीं है। राज्य में विधानसभा भी नहीं है और ना ही महबूबा ऐसे तस्वीरों में हैं कि वो दिल्ली में किसी राष्ट्रीय दल के करीबी चेहरों में हों। लेकिन महबूबा के बराबर खड़ी नेशनल कॉन्फ्रेंस फिलहाल मजबूत हालत में है। श्रीनगर की लोकसभा सीट समेत नेशनल कॉन्फ्रेंस का कश्मीर की 3 सीटों पर कब्जा है। कश्मीर में 370 के अंत के बाद हुए डीडीसी चुनाव में भी नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 67 सीटें जीती हैं। ऐसे में कश्मीर के दो सबसे बड़े दलों में फारुक अब्दुल्ला की पार्टी महबूबा से ज्यादा मजबूत है। लेकिन फिर भी महबूबा प्रासंगिक नहीं है, ये नहीं कहा जा सकता। राजौरी में हाल में हुई आतंकी घटनाओं से उपजा असंतोष और कश्मीर में लंबे वक्त से चुनाव ना हो पाने से पैदा हुई स्थितियां दोनों की स्थितियों में महबूबा मुफ्ती जैसे नेताओं की प्रासंगिकता लोगों के लिए दिखती है। जम्मू-कश्मीर में पिछला चुनाव 2015 में हुआ था। इस वक्त महबूबा मुफ्ती की पार्टी के सबसे पावरफुल चेहरे रहे हसीब द्राबू, अल्ताफ बुखारी और मुजफ्फर हुसैन बेग जैसे नेता उनकी पार्टी छोड़ चुके हैं। हसीब द्राबू उन चेहरों में से थे, जिन्हें पीडीपी और बीजेपी के बीच समन्वय की कड़ी कहा जाता था। अल्ताफ बुखारी की पहचान भी वही थी। महबूबा मुफ्ती ने तमाम मंत्रियों के विभाग लेकर इन दोनों मंत्रियों को सौंपे थे, लेकिन अल्ताफ बुखारी वो चेहरा बने जिसने महबूबा से सबसे पहले बगावत की। अल्ताफ फिलहाल जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी बना चुके हैं। उनपर दिल्ली के करीबी होने की तोहमत लगती है।

महबूबा का बनाया गुपकार गठबंधन का एजेंडा ध्वस्त हो गया है। कश्मीर में 370 की बहाली और अस्मिता के कथित एजेंडे को जाहिर कर रही पीडीपी को कश्मीर की आवाम ही राजनीतिक तौर पर अप्रासंगिक करने लगी है। कश्मीर में उस धड़े को महबूबा में अपना नेता दिखता है, जो 370 के अंत से खुश नहीं हैं। लेकिन ये धड़ा सरकार बनाने को काफी नहीं होगा। वहीं फारुक अब्दुल्ला दोनों धड़ों में हैं। वो पक्के हिंदुस्तानी भी हैं और कश्मीरियों के अपने भी। ऐसे में जम्मू-कश्मीर में बीजेपी या कांग्रेस दोनों संग सरकार बनाना फारुक के लिए सहज है। महबूबा के लिए ये विकल्प सिर्फ कांग्रेस तक सीमित है। लंबे वक्त तक जम्मू-कश्मीर में काम कर चुके एक वरिष्ट पत्रकार कहते हैं कि महबूबा मुफ्ती अपने पिता मुफ्ती मोहम्मद सईद की उदारवादी राजनीति को संभाल नहीं पाईं ये बात सही है। मुफ्ती मोहम्मद सईद की विरासत पर सरकार बनाने वाली महबूबा मुफ्ती की सरकार खुद बीजेपी ने ही गिराई है। ऐसे में हाल की दिल्ली से महबूबा मुफ्ती दूर हुई हैं ऐसा दिखता है। लेकिन ये बात भी समझनी होगी कि महबूबा मुफ्ती कश्मीर में कट्टरपंथ वाली राजनीति में फिट दिखती हैं। महबूबा मुफ्ती के बयानों ने उन्हें एक तरीके से देश विरोधी या कट्टरपंथी रूप में लाकर खड़ा कर दिया है। कश्मीर में उस धड़े को महबूबा में अपना नेता दिखता है, जो 370 के अंत से खुश नहीं हैं। लेकिन ये धड़ा सरकार बनाने को काफी नहीं होगा।

जातीय जनगणना टालना सियासी दांव तो नहीं!

» जाति और धर्म के नाम पर वोट बैंक को सधने की कवायद

» जनगणना के अधिकृत और वैज्ञानिक आंकड़े जरूरी

» विपक्ष और सत्ता पक्ष के कुछ नेता चाहते हैं जातिगत जनगणना हो

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जहां बिहार जातिगत जनगणना शुरू करवाकर सुर्खियों में बना हुआ है वही एक खबर और भी जिसे संज्ञान नहीं लिया गया वो भारत की जनगणना की तारीखों का टाला जाना। केंद्र सरकार 2021 से लगातार तारीखे बढ़ाती जा रही है। कभी कोविड के नाम पर तो कभी और किसी वजह से। इस बार फिर टाल दी गई है। दरअसल, पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। तब देश की आबादी 121 करोड़ थी। अब अनुमान है कि हम जनसंख्या में चीन से आगे निकलने वाले हैं।

जानकारों की माने तो मोदी सरकार इन तारीखों को इसलिए बढ़ा रही है क्योंकि वह नहीं चाहती जातिगत व पिछड़ा वर्ग की संख्या सामने आए। अभी केवल अनुसूचित जाति और जनजाति की संख्या ही जनगणना में आती है। अब कई राज्य जातिगत गणना की मांग कर रहे हैं। खासकर, पिछड़ा वर्ग की गणना। केंद्र सरकार इस पचड़े में पड़ना नहीं चाहती, इसलिए तारीखें बढ़ाई जा रही हैं। पहली जनसंख्या भारत में 1881 में हुई थी। तब आबादी 25.38 करोड़ थी। सवाल ये उठता है कि किसी देश की बढ़ती आबादी उसके लिए फायदेमंद है या नुकसानदेह? क्योंकि हमेशा चर्चा होती है कि जनसंख्या वृद्धि एक विस्फोट की तरह है। इस पर काबू नहीं पाया गया तो देश गरीबी के गर्त में चला जाएगा। कई विशेषज्ञों का मानना है कि जनसंख्या ज्यादा होना किसी भी देश के लिए फायदेमंद ही होता है, नुकसानदेह नहीं। मान लीजिए कि एक व्यक्ति घर में कमाने वाला है। उसके चार बच्चे हैं। आगे चलकर चारों कमाने लगें तो यह उस परिवार के लिए फायदेमंद ही है। नुकसानदेह तब था जब घर में एक ही व्यक्ति कमाता था और खाने वाला पूरा परिवार होता था। अब ऐसा नहीं है। अब तो घर का हर व्यक्ति, चाहे वह महिला हो या पुरुष, सब नौकरी या बिजनेस में जुटे हैं। इसीलिए, जनसंख्या वृद्धि अब अभिशाप नहीं, बल्कि वरदान है।

वहीं बिहार में जातिगत गणना के खिलाफ पीआईएल पर सुप्रीम कोर्ट में अगले हफ्ते सुनवाई होगी। संविधान की सातवीं अनुसूची और 1948 के कानून के अनुसार जनगणना कराने का अधिकार केंद्र सरकार को ही है। लेकिन ओबीसी के बारे में आयोग बनाने के साथ सामाजिक-आर्थिक सर्वे कराने के बारे में राज्य सरकारों को हक हासिल है। बिहार से पहले कर्नाटक में 2014 में जातिगत जनगणना हो चुकी है। समान नागरिक संहिता पर कानून बनाने का केंद्र को हक है। लेकिन इस बारे में कई राज्यों में बनाई गई समितियों को सुप्रीम कोर्ट ने हरी झंडी दिखा दी है। हर 10 साल में कराई जाने वाली जनगणना को 2021 में पूरा करने में केंद्र सरकार विफल रही है। इसलिए बिहार की जातिगत गणना का राज्य के भाजपा नेता भी विरोध नहीं कर पा रहे।

देश में हो रही है वोट बैंक की राजनीति

ओबीसी की 52 फीसदी आबादी को 27 फीसदी आरक्षण का लाभ देने के लिए मंडल आयोग ने अविभाजित भारत की सन् 1931 की जनगणना को आधार माना था। उसके बाद से इस मामले पर तथ्यपरक काम के बजाय वोट बैंक की राजनीति और मुकदमेबाजी हो रही है। पिछली बार 2011 की जनगणना में ओबीसी की गणना के लिए जाति के कॉलम को शामिल करने पर तत्कालीन गृहमंत्री चिदम्बरम ने वीटो लगा दिया था। उसके बाद चलताऊ तरीके से ग्रामीण विकास और आवास मंत्रालयों के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक सर्वे किया। आधार और वोटर लिस्ट अपडेट हो रही है। अदालतों से अनुच्छेद-15, 16 और 343 की व्याख्या से शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन के नए वर्गीकरण हो रहे हैं। संविधान के 103वें संशोधन से ईडब्ल्यूएस के आरक्षण को सुप्रीम कोर्ट की मान्यता के बाद 99 फीसदी आबादी आरक्षण के दायरे में आने से 50 फीसदी लिमिट पार होना तय है। जनसंख्या के आधार पर वित्त आयोग राज्यों के लिए संसाधन आवंटित करता है। खाद्य सुरक्षा कानून के तहत आबादी के अनुसार राज्यों को सस्ता अनाज मिलता है। नई जनगणना नहीं होने से लगभग 12 करोड़ गरीब पीडीएस के लाभ से वंचित हो सकते हैं। आम चुनावों के पहले सरकारी पदों में बम्पर भर्ती में आरक्षण लागू करने के लिए भी नवीनतम डाटा जरूरी है। चुनाव आयोग के रिमोट ईवीएम पर हो रही चर्चा के अनुसार देश में 45 करोड़ लोग प्रवासी हैं। दूसरे राज्यों में बसी इस प्रवासी आबादी को किस राज्य का माना जाए? इस सवाल के जवाब से संसद और राष्ट्रपति चुनावों में राज्यों का दबदबा बदल सकता है। फिलहाल 2001 की पुरानी जनगणना के अनुसार ही संसद में राज्यों का प्रतिनिधित्व है। 84वें संविधान संशोधन के अनुसार 2021 की जनगणना के अनुसार 2026 में विधानसभा और संसद की सीटों के परिसीमन का प्रावधान है। उस बड़ी संवैधानिक कवायद के बाद ही 2029 के आम चुनाव होने चाहिए। नए साल की शुरुआत में राम मंदिर के निर्माण की तारीख की घोषणा और बिहार में जातिगत जनगणना की शुरुआत से अगले आम चुनावों के लिए धर्म और जाति का एजेंडा सेट-सा लगता है। जाति और धर्म के नाम पर वोटबैंक और अफवाहों की सियासत को खत्म करने के लिए जनगणना के अधिकृत और वैज्ञानिक आंकड़े जरूरी हैं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

कब तक अनदेखी करती रहेंगी सरकारें!

सरकारों की अनदेखी, जनता की नासमझी का नतीजा है जोशीमठ का धंसना। भारत में जिस तरह से आबादी बढ़ रही है उस हिसाब से संसाधन घट रहे हैं। आमजन की मजबूरी है कि वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने आस-पास के ही प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हैं। ये दोहन कभी-कभी इतना ज्यादा हो जाते हैं कि नेचुरल असंतुलन पैदा कर देते हैं। इस वजह जहां मैदानी क्षेत्रों में भूकंप, सूखा, समुद्री इलाकों में सुनामी, बाढ़ वहीं पहाड़ी स्थानों में भूस्खल जैसी घटनाए बढ़ने लगती हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं से जानमाल की हानि तो होती ही है प्रकृति का भी नुकसान होता है। ताजा मामला जोशीमठ का जहां सैकड़ों घर भू-धंसाव की वजह से खतरे में आ गए हैं। 23 साल के उत्तराखंड में अनियोजित तरीके से भवन निमार्ण व अन्य गतिविधियों की वजह से पहाड़ों को काटा जा रहा जिससे कि पहाड़ दरक रहे हैं और जनहानि कर रहे हैं।

“ ताजा मामला जोशीमठ का जहां सैकड़ों घर भू-धंसाव की वजह से खतरे में आ गए हैं। 23 साल के उत्तराखंड में अनियोजित तरीके से भवन निमार्ण व अन्य गतिविधियों की वजह से पहाड़ों को काटा जा रहा जिससे कि पहाड़ दरक रहे हैं और जनहानि कर रहे हैं।

सबसे बड़ी विडंबना यह कि सरकारें सबकुछ जानते हुए इस पर मौन रहती हैं उनकी आंखे तब खुलती हैं जब कोई बड़ी घटना घट जाती है। जोशीमठ हिंदुओं और सिखों के प्रमुख तीर्थस्थानों का गेटवे है। हिंदुओं की ठेकेदार बनने वाली केंद्र की सरकार इस मामले पर अबतक चुप्पी साधे हुए हैं। अब जब लोग सड़कों पर उतर आए और हर तरफ से आवाजें उठने लगीं, तब पीएम ने भी इस मामले में संज्ञान लिया। साल 2013 में चिंताएं जताई गयी थीं कि हाइड्रो पावर परियोजना से जुड़ी सुरंगें उत्तराखंड में तबाही ला सकती हैं। उस साल ये प्रोजेक्ट रोक दिए गए थे। दिसंबर के महीने में ही जोशीमठ नगर पालिका ने एक सर्वे कराया था, जिसमें ऐसी सम्भावना जताई गई थी कि इस तरह की आपदा से 2882 लोग प्रभावित हो सकते हैं। इससे पहले साल 1970 में भी जोशीमठ में जमीन धंसने की घटनाएं सामने आई थीं। प्राकृतिक आपदा के कारणों की जांच के लिए गढ़वाल कमिश्नर महेश मिश्रा की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई थी। इस समिति ने साल 1978 में आई अपनी रिपोर्ट में बताया था कि जोशीमठ, नीति और माना घाटी में बड़ी निर्माण परियोजनाओं को नहीं चलाना चाहिए क्योंकि ये क्षेत्र मोरेंस पर टिके हैं। मिश्रा कमिटी की रिपोर्ट में इस बात का साफ उल्लेख किया गया था कि प्राकृतिक संसाधनों खासतौर से जंगल को नुकसान पहुंचा दिया गया है। पहाड़ी ढलान पेड़ विहीन होने के चलते खतरे की जद में हैं। यहां भूस्खलन हो रहा है। इसके बाद 1991 में जब हेलंग मारवाड़ी बाईपास के निर्माण को मंजूरी दी गई। उस समय इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एक वाद दायर किया गया और मिश्रा कमिटी की रिपोर्ट के आधार पर उच्च न्यायालय ने हेलंग मारवाड़ी बाईपास के निर्माण पर स्टे दिया। इसके बावजूद भी सरकारों ने कोई ध्यान नहीं दिया। जिसके दुस्परिणाम आज सामने आ रहे हैं।

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

हवाई यात्रा में बढ़ता दुर्व्यवहार निंदनीय

सुनील बादल

कुछ दशक पहले एक आम भारतीय के लिए हवाई यात्रा न केवल दुर्लभ थी, बल्कि वह सपने में भी नहीं सोच सकता था कि एक दिन लोग हवाई यात्रा में आम लोग भी देश-विदेश की यात्रा कर पायेंगे। कर्नाटक के पूर्व सैनिक कैप्टन जीआरए गोपीनाथ ने सस्ती हवाई यात्रा के सपने को डेक्कन एयरवेज के माध्यम से सच कर दिखाया। अब सरकार विदेशों की तरह भारी संख्या में छोटे एयरपोर्ट के निर्माण या पहले की हवाई पट्टियों की मरम्मत कर हवाई यात्रा में क्रांति लाना चाहती है। पर हवाई यात्राओं में बढ़ती अनुशासनहीनता और दुर्व्यवहार से इस पर एक नयी बहस शुरू हो गयी है कि भले ही आज की उड़ान ऊंची हो, पर लोगों की सोच घटिया हो रही है।

हवाई यात्रा में यात्रियों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के मामले बढ़ते जा रहे हैं। हाल ही में एक विमान कंपनी के बिजनेस क्लास में नशे में धुत एक यात्री ने बुजुर्ग महिला पर पेशाब कर दिया। हालांकि इस तरह का यह कोई पहला मामला नहीं है। पहले भी ऐसे मामले सामने आ चुके हैं जहां किसी बदतमीज यात्री ने दूसरे के ऊपर पेशाब किया, केबिन में अश्लील हरकत या फिर अश्लील इशारे किये। हाल का मामला इसलिए अलग है, क्योंकि विमान के स्टाफ ने पीड़िता को एक कोने में बैठा दिया, जबकि आरोपी को ऐसे ही छोड़ दिया गया, पीड़िता के मुताबिक. जब शिकायत पर बवाल मचा, तो एयरलाइंस ने आरोपी को 30 दिनों के लिए नो-फ्लाई लिस्ट में डाल दिया। केबिन में इस तरह की बदतमीजी करने वाले केवल भारतीय ही नहीं हैं। पिछले वर्ष फरवरी में कैलिफोर्निया के एक यात्री ने साउथ वेस्ट एयरलाइंस के एक विमान में केबिन के फ्लोर पर न केवल पेशाब कर दिया था, बल्कि फ्लाइट अटेंडेंट से भद्दी बात भी की थी। उस अमेरिकी यात्री पर फेडरल चार्ज लगे, उसे 20 वर्ष की जेल भी हो सकती है। पिछले वर्ष जून में ही एक और विदेशी यात्री ने नशे में खूब हंगामा किया था। उसने विमान में अपने भाई पर ही पेशाब कर दिया था। इस कारण लंदन से क्रेटे जा रहे विमान को कोर्फू में उतारा गया, आरोपी को ग्रीक पुलिस ने हिरासत में ले लिया था। भारत में भी अप्रैल, 2021 में बेंगलुरु से नयी दिल्ली जा रही एक फ्लाइट में शराब के नशे में एक यात्री ने अपने कपड़े उतार दिये थे। उस यात्री को दिल्ली पुलिस को सौंप दिया गया था।

दिल्ली से पटना जा रही एक फ्लाइट में हाल ही में एयर होस्टेस के साथ दुर्व्यवहार के आरोप में दो यात्रियों को हिरासत में लिया गया है, जबकि तीसरा शराबी भाग निकला। स्थापित शिष्टाचार के विरुद्ध इस तरह के आचरण से न केवल हवाई यात्रा की व्यवस्था में लगे

लोग तनाव में आ जाते हैं, बल्कि यात्रियों के मन में भी आता है कि अब कड़े प्रावधान बनाने का समय आ गया है। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने 2017 में घोषणा की थी कि विमान में नियमों को तोड़ना या काम में बाधा डालना दंडनीय अपराध है। यात्रियों के ऐसे व्यवहार से विमान की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। ऐसे में आरोपी यात्री के बारे में पायलट-इनकमांड को शिकायत करनी होगी। एयरलाइंस द्वारा गठित एक आंतरिक समिति मामले की जांच करेगी। समिति को 30 दिन के भीतर निर्णय लेना होगा। साथ ही बताना होगा कि यात्री पर कितने दिन का प्रतिबंध लगाया जाए। नियम के तहत जांच के दौरान एयरलाइंस आरोपी पर प्रतिबंध लगा सकती है। अगर कोई दोबारा अपराध करता है, तो पिछले अपराध की तुलना में प्रतिबंध की अवधि दोगुनी हो जायेगी। डीजीसीए के अनुसार, कानून के बाहर या अनियंत्रित व्यवहार तीन तरह के होते हैं। स्तर एक, यात्री ने मौखिक रूप से नियम तोड़ा हो। इसमें तीन महीने तक का प्रतिबंध है। स्तर दो, शारीरिक रूप से नियमों को भंग करना। इसमें छह महीने तक का प्रतिबंध लग सकता है। स्तर तीन, यात्री का व्यवहार जीवन को खतरे में डालने वाला हो। ऐसे मामले में कम से कम दो वर्ष का प्रतिबंध है। अगर यात्री का व्यवहार राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हो, तो और कड़ी कार्रवाई की जा सकती है। वायुयान नियम 1937 की धारा 22 के तहत ऐसा कोई भी व्यक्ति विमान में सवार नहीं हो सकता जो क्रु मेंबर को धमकाये या डराये। उनके काम में हस्तक्षेप करे। हवाई यात्रा कभी अपने अनुशासन के लिए जाना जाता था। विमान में प्रवेश करने पर एयरलाइंस-कर्मी की ओर से अनुशासन और अपने पन को लेकर बहुत अच्छा व्यवहार किया जाता रहा है, जिससे लगता है कि यात्रियों को ऊंचा दर्जा दिया जा रहा है। पर यात्रियों को शराब परोसने के दौरान विमान परिचारिकाओं से बदतमीजी करना अब आम होता जा रहा है, जिस पर लगाम की जरूरत है।

विमान में यात्री दुर्व्यवहार न करें, इसके लिए ठोस व्यवस्था करनी होगी। कुछ नये कड़े कानून लागू करने होंगे। पूरे देश को शर्मसार कर देने वाले लोगों को केवल 30 दिनों की हवाई यात्रा से प्रतिबंधित कर दिये जाने से उनके हौसले बढ़ेंगे और वेकल फिर से यही हरकत करेंगे। ऐसी हरकतों को अपराध की श्रेणी में रखते हुए यदि कम से कम पांच वर्ष तक के कारावास की व्यवस्था की जाए, तो कोई भी ऐसी हरकत करने की हिम्मत नहीं करेगा। हवाई यात्रा हो, रेल यात्रा हो या फिर बस यात्रा, किसी के साथ बदतमीजी करने का किसी को कोई अधिकार नहीं है।

जीवन की प्राथमिकताओं को संतुलित करना जरूरी

डॉ. संजय तनेजा

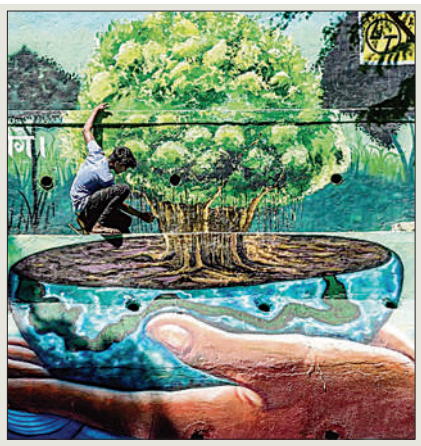

वैश्विक उथल-पुथल और कोरोना संकट ने सतत आपूर्ति श्रृंखला की जरूरत को बताया। दरअसल, उद्योगों द्वारा उत्पन्न पर्यावरणीय खतरों के बारे में समाज की जागरूकता के चलते लाये गये परिवर्तनों के परिणामस्वरूप औद्योगिक प्रक्रियाओं को बदलने के लिए बाध्य किया गया है। कई वर्षों से ठोस और तरल अपशिष्ट, वायु-जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, गैर-नवीकरणीय संसाधनों और आवश्यक खनिजों के बड़े पैमाने पर उत्पादन में इन गतिविधियों का प्राथमिक योगदान रहा है। कुछ महत्वपूर्ण पहलें और प्रेरणाएं जो संगठनों को अपनी आपूर्ति श्रृंखला नीति को सतत आपूर्ति श्रृंखलाओं (एसएससी) की ओर अधिक बदलने के लिए प्रेरित करती हैं, उनमें सोशल मीडिया और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ), वैश्विक समुदाय के अनुरोध (जैसे कि 17 सतत विकास लक्ष्य स्थापित) शामिल हैं। वहीं संयुक्त राष्ट्र और हाल ही में 2021 में ग्लासगो में आयोजित विश्व जलवायु परिवर्तन सम्मेलन ,और विभिन्न ग्राहक और हितधारक स्थिरता अपेक्षाएं भी हैं।

दरअसल, सतत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन रणनीतियों को लागू करने के लिए कदम उठाने की जरूरत है। कंपनियां आपूर्ति श्रृंखलाओं में पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को नियंत्रित और संसाधनों को बढ़ाकर संरक्षित कर सकती हैं। साथ ही प्रक्रियाओं का अनुकूलन कर सफलताएं पा सकती हैं, लागत कम कर सकती हैं, उत्पादकता बढ़ा सकती हैं और कॉर्पोरेट मूल्यों को आगे बढ़ा सकती हैं। एक शोध के अनुसार, आपूर्ति श्रृंखला स्थिरता के लिए अधिक से अधिक प्रयास जरूरी हैं। हालांकि किसी कंपनी की आपूर्ति श्रृंखला में स्थिरता को एकीकृत करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, समय पर कार्रवाई न करना सबसे बड़ा खतरा हो सकता है। अधिक स्थायी आपूर्ति श्रृंखलाओं की ओर बढ़ने के लिये व्यवसाय के शुरुआती चरणों में कई जरूरी कदम उठाये जा सकते हैं।

इसके लिये जरूरी है कि आपूर्ति श्रृंखला के मानचित्र बनाए जाएं। कई व्यवसायों को इस बात की गहन जानकारी की आवश्यकता होती है कि उनकी आपूर्ति श्रृंखला स्थिरता को कैसे प्रभावित करती है। आपूर्तिकर्ताओं की सूची बनाना, उनके सामने आने वाले सबसे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय और सामाजिक मुद्दों का निर्धारण करना और आपूर्तिकर्ताओं के साथ अपने प्रयासों को प्राथमिकता देना शुरू करना अच्छी पहल मानी जा सकती है। आपूर्तिकर्ताओं का आधारभूत प्रदर्शन एक महत्वपूर्ण घटक है। व्यापारियों, प्रसिद्ध ब्रांडों और अमेरिका की संघीय सरकारों सहित कई व्यवसायों ने सर्वेक्षणों और प्रश्नावली का उपयोग करके अपने आपूर्तिकर्ताओं के प्रदर्शन का आकलन करना शुरू किया है। संगठन अपनी कंपनी के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित स्व-मूल्यांकन करते समय अपनी आचार संहिता के सभी पहलुओं पर अधिक ध्यान और महत्व दे रहे हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स की आपूर्ति श्रृंखला में ऐसी पहल हुई है। फार्मास्यूटिकल सप्लाई चेन इनिशिएटिव सेल्फ-असेसमेंट प्रश्नावली और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग नागरिकता गठबंधन स्व-मूल्यांकन प्रश्नावली इसमें शामिल हैं। इसी मकसद से कुछ उद्योगों ने सूचना के लिए कई अनुरोधों का जवाब देने के लिए आपूर्तिकर्ताओं पर बोझ को कम करने के लिए सेक्टर-व्यापी सर्वेक्षण क्षेत्र बनाए हैं। निस्संदेह, जो सामग्री और प्रारूप में भिन्न है।

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पहलों की स्थापना करना भी एक महत्वपूर्ण घटक है। दरअसल, आपूर्ति श्रृंखला में स्थिरता को बढ़ाने और व्यावहारिक समायोजन को प्रोत्साहित करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण पहल है। इन प्रयासों में सहायता के लिए कई बाहरी संसाधन उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ उद्योगों की आवश्यकताओं के लिए विशिष्ट हैं। निष्कर्षत: प्रभावी सतत विकास को प्राप्त करने के लिए, तीन प्राथमिक उद्देश्यों को एक साथ लागू किया जाना चाहिए। एक-दूसरे के साथ लगातार प्रतिबद्ध प्रयास में बातचीत करना जरूरी है। विकास के लिए इन रणनीतियों को लागू करने का मतलब है कि शहरों को कम कार्बन वाला विकास और सार्वजनिक परिवहन, जलवायु-स्मार्ट कृषि, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और ऊर्जा में अधिक दक्षता और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को अपनाना चाहिए।

सतत विकास प्रथाएं देशों को उन तरीकों से बढ़ने में मदद करती हैं जो जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों के अनुकूल होते हैं। जो बदले में हमारी और भावी पीढ़ियों के लिए महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने में मदद करेंगे। अनुमान है कि वर्ष 2050 तक हमारी वैश्विक आबादी 9 अरब लोगों तक पहुंच जाएगी। सतत विकास की चुनौती को इस तरह से आगे बढ़ाना है कि इनमें से हरेक व्यक्ति हमारे प्राकृतिक संसाधनों के लिए हानिकारक हुए बिना जीवन की पर्याप्त गुणवत्ता का आनंद ले सके।

मकर संक्रांति में बनाएं मजेदार पकवान

हिंदू धर्म में मकर संक्रांति के त्योहार का विशेष महत्व है। मकर संक्रांति का त्योहार धार्मिक,ज्योतिषीय और सांस्कृतिक नजरिए से खास होता है। हिंदू धर्म में जहां पर सभी त्योहारों की गणना चंद्रमा की गणना पर तिथियों के अनुसार मनाया जाता है, वहीं मकर संक्रांति का त्योहार सूर्य पर आधारित पंचांग की गणना के आधार पर मनाया जाता है। ये त्योहार संगीत धूम और मस्ती के साथ स्वादिष्ट पकवानों के लिए भी जाना जाता है। नए साल में त्योहारों का सीजन एक बार फिर शुरू होने जा रहा है। मकर संक्रांति त्योहार देश के अलग-अलग हिस्सों में बड़ी धूम के साथ मनाया जाता है। मकर संक्रांति को आधिकारिक तौर पर सर्दियों का अंत और वसंत की शुरुआत माना जाता है। यानी इसके बाद दिन लंबे होना शुरू हो जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये त्योहार परंपराओं के साथ मनाया जाता है। इस पावन त्यौहार को कई लोग खिचड़ी के नाम से जानते हैं तो कई लोग पोंगल के नाम से भी जानते हैं। इस दिन गंगा स्नान करना भी काफी शुभ माना जाता है।

तिल के लड्डू

तिल के लड्डू संक्रांति में जरूर बनाए जाते हैं। छोटे से ये लड्डू गर्म तिल और गुड़ से बनते हैं। ये छोटे बीज दिल की बीमारी, डायबिटीज और अर्थराइटिस से बचाते हैं और सेहत को कई तरह से फायदा करते हैं। तिल फाइबर का उच्च स्त्रोत होने के साथ कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, जो दिल की बीमारी का बड़ा कारण होता है।

तिल की टिक्की

सामग्री

दो कप आटा, एक कप बेसन, एक चम्मच घी, एक उबला हुआ आलू, एक कप तिल, नमक, हल्दी पाउडर, जीरा पाउडर, अमचूर पाउडर, बारीक कटी हरी मिर्च, बारीक कटा धनिया, सेंकने के लिए तेल।

बनाने की विधि

- गेंहू के आटे और बेसन को मिला लें।
- इस आटे में आधा कप तिल, एक उबला आलू, हल्दी पाउडर, जीरा पाउडर, अमचूर पाउडर, बारीक कटी हरी मिर्च, बारीक कटा धनिया पत्ती और स्वादानुसार नमक मिला लें।
- मोयन के लिए एक बड़ा चम्मच घी मिलाकर आवश्यकतानुसार पानी डालते हुए सख्त आटा गूंद लें।
- अब आटे की छोटी छोटी लोइयां बना लें।
- बचे हुए आधे कप तिल को चकले पर फैलाकर टिक्की को बेल लें।
- इस तरह से टिक्की तिल से चिपक जाएगी।
- अब मध्यम आंच पर पैन या तवा गर्म करें।

- हल्का तेल फैला कर टिक्की को सुनहरा होने तक सेंकें। ध्यान रखें कि आंच धीमी हो, ताकि टिक्की कुरकुरी बने।

गुड़ और मूंगफली की चिक्की

सामग्रीः गुड़ और मूंगफली की चिक्की बनाने के लिए आपको अधिक सामग्री की जरूरत नहीं होती। सिर्फ एक कप मूंगफली के दाने, एक कप गुड़ के टुकड़े और दो चम्मच घी से चिक्की तैयार कर सकते हैं।

बनाने की विधिः एक कड़ाही में मूंगफली को सूखा भून लें। मूंगफली जब ठंडी हो जाए तो उसे हाथ से मसलकर छिलके निकाल लें। अब एक पैन को धीमी आंच पर गर्म करें, उसमें गुड़ के टुकड़े और एक चम्मच घी मिला लें। गुड़ को लगातार धीमी आंच पर पिघलाएं और उसे धीरे धीरे चम्मच से चलाते रहें। जब गुड़ पूरी तरह से पिघलने लगे और उसमें उबाल आने लगे तो हल्का पानी मिला सकते हैं। जब गुड़ की चाशनी तैयार हो जाए तो आंच धीमी करके उसमें मूंगफली के दाने डालकर अच्छी तरह से मिला लें। अब गैस बंद कर दें और किसी ट्रे या थाली में घी लगाकर गुड़ की चाशनी को समतल फैला लें। इस मिश्रण को पतला फैलाकर बेलन से घी लगाकर चिक्की को बेल लें। इसे ठंडा होने के लिए रख दें। बाद में चाकू से बर्फी के आकार में काट लें।

मखाने की खीर

मखाना किसी सुपरफूड से कम नहीं है, यही वजह से इसे सबसे हेल्दी स्नैक माना जाता है। मखाने कई तरह के पोषक तत्वों का बड़ा स्त्रोत होते हैं, इसलिए इन्हें डाइट में जरूर शामिल करें। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होने के साथ मखाना ब्लड शुगर के स्तर को संतुलित रखत है और वजन कम करने में मदद भी करता है। मखाने में दूध भी डलता है, जो कैल्शियम, मैग्नीशियम, लोहा और फास्फोरस जैसे माइक्रो-न्यूट्रीएंट्स से भरा होता है। यानी मखाने की खीर का सेवन आपकी हड्डियों को मजबूती देने के साथ ब्लड प्रेशर को कम करता है ।

हंसना मना है

एडल्ट जोक्स इन हिंदी कोई गम नहीं मगर दिल उदास है, तुझसे कोई रिश्ता नहीं फिर भी एहसास है, कहने को बहुत अपने है मगर तू एक खास है, ज्यादा इमोशनल ना होना ऊपर सब बकवास है।

मछली जल की रानी है: इसका नया वर्जन.. पत्नी घर की रानी है, करती अपनी मनमानी है, काम बताओ तो चिढ जाएगी, शॉपिंग कराओ तो खिल जाएगी।

1 युग था जब लोग अपने घर के दरवाजे पे, लिखते थे: अतिथी देवो भव, फिर लिखा: शुभ लाभ, फिर लिखा: यू आर वेलकम, और अब: कुत्तों से सावधान !

हमने पटाई एक लड़की तो सोचा, हमारी लॉटरी निकल गयी, डेट पे बुलाया मिलने को तो, हाय रे फूटी किस्मत, वो राखी बांध के चली गयी।

कहानी — सियार और जादुई ढोल

एक जंगल के पास दो राजाओं के बीच युद्ध हुआ। उस युद्ध में एक की जीत और दूसरे की हार हुई। युद्ध खत्म होने के एक दिन बाद तेज आंधी चली, जिस कारण युद्ध के दौरान बजाया जाने वाला ढोल लुढ़क कर जंगल में चला गया और एक पेड़ के पास जाकर अटक जाता है। जब भी तेज हवा चलती और पेड़ की टहनी ढोल पर पड़ती, तो ढमाढम-ढमाढम की आवाज आने लगती थी। उसी जंगल में एक सियार खाने की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था और अचानक उसकी नजर गाजर खा रहे खरगोश पर पड़ती है। सियार उसे शिकार बनाने के लिए सावधानी से आगे बढ़ता है। जब वह खरगोश पर झपटा मारता है, तो खरगोश उसके मुंह में गाजर को फंसाकर भाग जाता है। किसी तरह से सियार गाजर को मुंह से बाहर निकालकर आगे बढ़ता है, तो उसे ढोल की तेज आवाज सुनाई देती है। वह घबरा जाता है और सोचने लगता है कि उसने पहले कभी किसी जानवर की ऐसी आवाज नहीं सुनी। जहां से ढोल की आवाज आ रही थी, सियार उस ओर जाता है और यह जानने की कोशिश करता है कि जानवर उड़ने वाला है या चलने वाला। फिर वह ढोल पर हमला करने के लिए कूदता है, तो ढम की आवाज आती है, जिसे सुनकर सियार छलांग लगा कर उतर जाता है और पेड़ के पीछे छुपकर देखने लगता है। कुछ मिनट बाद किसी तरह की प्रतिक्रिया न होने पर वह फिर से ढोल पर हमला करता है और फिर से ढम की आवाज आती है और वह फिर से ढोल से कूदकर भागने लगता है, लेकिन इस बार वह वहीं पर रुककर मुड़कर देखता है। ढोल में किसी भी तरह की हलचल न होने पर वह समझ जाता है कि यह कोई जानवर नहीं है। फिर वह ढोल पर कूद-कूद कर ढोल को बजाने लगता है। इससे ढोल हिलने लगता है और लुढ़कने भी लगता है, जिससे सियार ढोल से गिर जाता है और ढोल बीच में से फट जाता है। ढोल के फटने पर उसमें से विभिन्न तरह के स्वादिष्ट भोजन निकलते हैं, जिसे खाकर सियार अपनी भूख को शांत करता है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज व्यापार के मामलों में आपके मन में नए- नए विचार आ सकते हैं। आज आपका दिन बेहतरीन रहेगा। किसी काम में मित्रों की सलाह फायदेमंद साबित हो सकती है।

वृषभ

वृषभ राशि के जातक आज बेहद व्यस्त रहने वाले हैं, काम की वजह से घर से दूर जाना पर सकता है। क्रोध और आवेश में आकर संबंधों को खराब न करें धैर्य से काम लें।

मिथुन

पेचीदा हालात में फंसने पर घबराएं नहीं। जैसे खाने में थोड़ा-सा तीखापन उसे और लजीज बना देता है, उसी तरह ऐसी परिस्थितियां आपको खुशियों की सही कीमत बताती हैं।

कर्क

आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। पारिवारिक कामों को करने में घर के सदस्यों का सहयोग प्राप्त हो सकता है। मित्र से निजी समस्याओं को शेयर करने से आपको बचना चाहिए।

सिंह

आपके दाम्पत्य जीवन में मधुरता आएगी। आज आपका नसीब आपके साथ बना रहेगा। व्यापार को बढ़ाने की लगातार चुनौती रहेगी। जिससे आप थोड़े परेशान से रहेंगे।

कन्या

जिन्दगी की बेहतरीन चीजों को शिद्दत से महसूस करने के लिए अपने दिल-दिमाग के दरवाजे खोलें। चिंता को छोड़ना इसकी ओर पहला कदम है।

तुला

आज आपका दिन परिवार वालों के साथ बीत सकता है। आप साथियों के साथ बाहर घूमने का प्लान बना सकते हैं। गुस्से में किसी से बात करने से आपको बचना चाहिए।

वृश्चिक

आज परिवार से भरपूर सहयोग मिलेगा परन्तु वैचारिक मतभेद हो सकता है। आपको अपने माता-पिता का पूरा साथ और आशीर्वाद प्राप्त होगा।

धनु

धार्मिक और आध्यात्मिक रुचि के काम करने के लिए अच्छा दिन है। दिन चढ़ने पर वित्तीय तौर पर सुधार आएगा। अपने सामाजिक जीवन को दरकिनार न करें।

मकर

आज आपका दिन मिला-जुला रहेगा। ऑफिस में एक्सट्रा वर्क करने से रूका हुआ काम जल्दी पूरा हो सकता है। इस राशि के बिजनेसमैन का दिन आज काफी व्यस्त रहेगा।

कुम्भ

यदि आप एक नौकरी कर रहे हैं तो आज आपको अपनी नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। नौकरी-धंधे की चिंता भी खत्म हो सकती है। उलझे मामलों में सफलता मिल सकती है।

मीन

आज आपका दिन खुशनुमा रहेगा। आपका आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। ऑफिस में आपके काम को लेकर बॉस आपकी तारीफ कर सकते हैं।

आदिल के प्यार में राखी सावंत बनीं फातिमा

बॉलीवुड | गपशप

राखी सावंत इन दिनों अपनी शादी को लेकर चर्चा का विषय बनी हुई हैं। पिछले काफी समय से वो आदिल के साथ अपना समय बिता रही हैं लेकिन कल ही राखी ने खुलासा किया कि वो उन्होंने सात महीने पहले ही आदिल से शादी कर ली थी और यहां तक कि आदिल के लिए अपना धर्म तक बदल दिया था। राखी ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया है, जिसमें वो आदिल को वरमाला पहनाते हुए नजर आ रही हैं। हालांकि, आदिल ने शादी की बात से इनकार किया है और आदिल की बात जानकर राखी का दिल टूट गया है।

राखी सावंत ने बीते दिन सोशल मीडिया पर अपनी कुछ फोटोज शेयर की थीं, जिनमें आदिल और वो साइन करते नजर आ रहे हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए राखी सावंत ने लिखा है- आखिरकार, मैं अपने प्यार से शादी करके बहुत खुश हूं और एक्साइटेड हूं, आदिल मेरा प्यार तुम्हारे लिए बेशर्त है। इसके बाद राखी ने एक वीडियो भी शेयर किया, जिसमें वो आदिल को वरमाला पहना रही थीं और इस वीडियो के पीछे आवाज थी-मेरे बर्दाश्त की एक हद है तो इसलिए हद पार ना करें। राखी के इस वीडियो से साफ जाहिर होता है कि वो आदिल को आगाह करना चाहती हैं। राखी सावंत ने इन फोटोज के साथ अपने इंस्टा अकाउंट पर एक मैरिज सर्टिफिकेट की एक फोटो भी शेयर की है, जिसमें राखी सावंत के नाम के नीचे फातिमा लिखा नजर आ रहा है। यहां तक कि इस सर्टिफिकेट में शादी की डेट भी लिखी हुई है जो है- 29 मई 2022। राखी सावंत ने बताया कि उनकी शादी हलाला (लीगल) के तहत हुई है। राखी ने कहा, मैंने हराम नहीं बल्कि हलाला किया है। कई लोग हराम करते हैं, लेकिन मैंने हलाला किया। मैं गलत नहीं हूं। एक्ट्रेस का कहना है कि आदिल उनसे बात भी नहीं कर रहे हैं।

कार्तिक की शहजादा का ट्रेलर रिलीज

बॉलीवुड | मसाला

कार्तिक आर्यन इन दिनों बॉलीवुड के उभरते हुए सितारे बन रहे हैं। उन्होंने पिछले साल भूल-भुलैया जैसी शानदार फिल्म की है, जो ब्लॉबस्टर साबित हुई थी। इस साल कार्तिक आर्यन शहजादा लेकर आ रहे हैं। कुछ दिनों पहले इस फिल्म का टीजर जारी हुआ था, जिसमें अभिनेता का दमदार लुक देखने को मिला था, तब से फैंस इस फिल्म के ट्रेलर का इंतजार कर रहे थे। अब मेकर्स ने शहजादा का ट्रेलर रिलीज कर दिया है। कार्तिक आर्यन की फिल्म का ट्रेलर जबरदस्त है। इसमें अभिनेता एक्शन के साथ-साथ कॉमेडी करते भी नजर आ रहे हैं।

शहजादा का ट्रेलर मनोरंजन का कंप्लीट डोज है। इसमें आपको भरपूर एक्शन, ड्रामा और रोमांस सभी कुछ देखने को मिलेगा। ट्रेलर की शुरुआत कार्तिक के एक्शन से ही होती है। अभिनेता कहते हैं कि जब बात फैमिली पर आ जाए तो डिस्कशन नहीं करते एक्शन करते हैं। इसके बाद कृति सेनन के साथ उनका रोमांस भी दिखाया जाता है। इसके अलावा परेश रावल इस फिल्म में कार्तिक के पिता के रोल में भी हैं।

ट्रेलर में एक बड़ा सा बंगला दिखाया जाता है। तब कार्तिक अपने पिता से पूछते हैं कि बाबा मैं बचपन से देख रहा हूं आप मुझे कभी अंदर नहीं जाने देते हैं। उसके बाद परेश रावल कहते हैं ये स्वर्ग है यहां तक पहुंचने के लिए तुम्हें बहुत पुण्य करने होंगे या मरना पड़ेगा। गरीबी में पलने बढ़ने वाले कार्तिक आर्यन को अचानक पता चलता है कि वह उनके पिता नहीं हैं और कार्तिक ही उस जिंदल परिवार और बड़ी सी हवेली का शहजादा हैं। बता दें कि इस फिल्म में कार्तिक आर्यन के अलावा परेश रावल, कृति सेनन और राजपाल यादव भी नजर आने वाले हैं। फिल्म में कार्तिक के किरदार का नाम बंटू होगा। शहजादा का निर्देशन डेविड धवन के बेटे रोहित धवन कर रहे हैं। इस फिल्म को सिनेमाघरों में 10 फरवरी को रिलीज किया जाएगा।

बॉलीवुड | मन की बात

परिवार को टूटने से बचाने के लिए कैंसर का ट्रीटमेंट लिया : संजय

संजय दत्त ने कैंसर को मात दी है। 2020 में उन्हें स्टेज 4 का लंग कैंसर हुआ था। दत्त परिवार को संजय को कैंसर होने की जानकारी मिलने पर बड़ा झटका लगा था। मगर इस मुश्किल वक्त में संजय ने हिम्मत से काम लिया। खुद भी मजबूत रहे और परिवार की हिम्मत को भी नहीं टूटने दिया लेकिन क्या आप जानते हैं शुरुआत में वे कैंसर ट्रीटमेंट लेने से कतरा रहे थे। बुधवार को संजय दत्त अपनी बहन प्रिया के साथ एक अस्पताल के इवेंट पर पहुंचे थे। वहां एक्टर ने अपनी कैंसर जर्नी पर बात की। अस्पताल में वे डॉक्टर भी मौजूद रहे जिन्होंने संजय का ट्रीटमेंट किया था। संजय दत्त से पूछा गया कि उन्होंने कैसे रिएक्ट किया जब उन्हें कैंसर की बात पता चली? एक्टर ने जवाब में कहा-मुझे कमर में दर्द था। मैं हॉट वॉटर बोतल से इसका ट्रीटमेंट कर रहा था, पेन किलर्स ले रहा था। फिर एक दिन मैं सांस नहीं ले पा रहा था। मुझे अस्पताल ले जाया गया लेकिन मुझे कैंसर होने की जानकारी पूरी तरह नहीं दी गई। मैं अस्पताल में पूरी तरह अकेला था। मेरी पत्नी, फैमिली, बहनें, मेरे साथ उस वक्त कोई नहीं था। मैं अकेला था और अचानक एक शख्स ने आकर कहा तुम्हें कैंसर है। मेरी पत्नी दुबई में थी, इसलिए प्रिया मेरे पास आई। मेरे परिवार में कैंसर की हिस्ट्री रही है। मेरी मां को पैंक्रियेटिक कैंसर था। मेरी पत्नी रिचा शर्मा की मौत ब्रेन कैंसर से हुई थी। पहली चीज जो मैंने कही थी वो ये कि मुझे कीमोथेरेपी नहीं लेनी थी। अगर मुझे मरना है तो मैं मर जाऊंगा लेकिन कोई ट्रीटमेंट नहीं लूंगा। संजय दत्त ने बताया कि राकेश रोशन ने उन्हें कैंसर का डॉक्टर सुझाया था। उन्हें उस मुश्किल वक्त में स्ट्रॉन्ग रहना पड़ा। वो अपने परिवार की खातिर ट्रीटमेंट लेने को राजी हुए थे। वे कहते हैं- मैंने अपने परिवार को टूटते हुए देखा और एक रात मैंने फैसला किया अगर मैं बीमार पड़ा या टूटा तो वे भी बीमार होंगे और टूटेंगे। इसलिए मैंने इससे लड़ने का फैसला किया। संजय ने खुलासा किया कि उन्होंने दुनिया से अपनी बीमारी को लेकर कुछ नहीं छिपाया था।

40 साल बाद जेल से बाहर आते ही मालामाल हो गया शख्स

दुनियाभर के जेलों में ऐसे हजारों कैदी बंद हैं जिन्हें बिना किसी जुर्म के सजा मिली। ऐसी ही खबरें कई बार मीडिया में आती है। जिसमें लोगों को अपनी जिंदगी के कई कई साल बिना जुर्म के जेलों में बिताने पड़ते हैं। ऐसा ही एक मामला कुछ साल पहले अमेरिका में सामने आया था। जहां एक शख्स को बिना किसी जुर्म के 40 साल जेल में रखा गया। लेकिन जब वह जेल से बाहर आया तो उसकी किस्मत चमक गई। क्योंकि सरकार ने उसे मुआवजे के रूप में 149 करोड़ रुपये दिए थे। ये घटना कैलिफोर्निया में रहने वाले एक शख्स के साथ हुई थी। वह सिमी वैली में रहता था। क्रेग कोले नाम के इस शख्स को गलत आरोप के चलते उसे 40 साल जेल की सजा काटनी पड़ी थी। इस शख्स पर अपनी गर्लफ्रेंड तथा उसके चार साल के बेटे की हत्या का गलत आरोप लगा था। क्रेग कोले को साल 2017 में बेगुनाह बताकर छोड़ दिया गया। इसके बाद उसे मुआवजे के तौर पर 21 मिलियन डॉलर की राशि यानि लगभग 149 करोड़ रुपए दिए गए थे। क्रेग को यह मुआवजा सालों से चल रहे लंबे, खर्चीले तथा बेवजह के कानूनी पचड़े के बाद क्षतिपूर्ति के रूप में दिया गया। सिटी मैनेजर ने इस संबंध में बयान जारी करते हुए कहा था कि क्रेग ने जो 40 सालों से झेला है, उसकी भरपाई किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती है। इसके लिए कोई भी कीमत पर्याप्त नहीं है। हालांकि यह एक छोटी सी कोशिश है कि वह अपनी आगे की जिंदगी इससे थोड़ी अच्छी कर सके। बता दें कि जो पैसे क्रेग को दिए गए, उसमें से 4.9 मिलियन डॉलर की राशि निगम की तरफ से दिए गए। इसके अलावा बाकी का पैसा इंश्योरेंस तथा अन्य स्रोतों से मुहैया कराई गई। साल 1978 में क्रेग को अपनी 24 वर्षीय गर्लफ्रेंड तथा उसके बेटे को मारने के लिए दोषी ठहराया गया था। हालांकि मामले की दोबारा जांच और डीएनए टेस्ट के बाद उसे बेगुनाह करार दिया गया। क्रेग ने बेगुनाह साबित होने की लड़ाई में अपनी जो सबसे महंगी कीमत चुकाई, वो है उसके मां-बाप की जान। कानूनी मदद उपलब्ध कराने लिए उसके मां-बाप को अपना घर गिरवी रखना पड़ा था। इसके बाद दर-दर की ठोकर खाते हुए उनकी मौत हो गई थी।

अजब-गजब | असम में लगता है दुनिया का सबसे अनोखा मेला

जहां बिना पैसे के मिलता है सामान

आज हम बिना पैसे के कुछ भी नहीं खरीद सकते, लेकिन अगर किसी तो पता चले कि कहीं बिना पैसे के या मुफ्त में कोई सामान मिल रहा है तो लोग टूट पड़ेंगे। अगर हम आपको कहें कि आज भी दुनिया में एक ऐसी ही जगह है जहां हर सामान बिना पैसे के मिलता है। तो इसे आप एक मजाक समझेंगे लेकिन बात एकदम सच है। दरअसल, असम के मोरीगांव जिले में जूनबिल क्षेत्र में एक मेला लगता है। इस मेले में हर सामान मुफ्त में मिलता है।

इस मेले में पहाड़ी जनजातियां और मैदानी जनजातियां बड़ी संख्या में पहुंचती हैं। वो अपना सामान बेचने के लिए इस मेले में आती हैं। हर साल ये मेला तीन दिन के लिए लगता है। दुनियाभर में इस तरह की परंपरा के अनुसार आयोजित होने वाला यह मेला अपने आप में अनोखा मेला है।

इस मेले की खासियत है कि इसमें आधुनिक मुद्रा यानि पैसे का चलन नहीं है। यहां सामान की खरीददारी कीमत तय करने के बाद सामानों की अदला-बदली से की जाती है। दोपहर के वक्त पहाड़ों से आने वाली जनजातियां अपने सामानों को मेला में लेकर पहुंचती हैं। बता दें कि इन जनजातियों को यहां

पर आम बोलचाल में मामा-मामी के नाम से संबोधित किया जाता है। बता दें कि मेला पिछले पांच सौ साल से ऐसे ही चला आ रहा है। जिसमें जनजातियों के समागम के रूप में देखा जा सकता है। इस मेले में पहाड़ी जनजातियों और मैदानी लोगों के बीच कृषि जनित सामग्रियों की खरीद-फरोख्त होती है।

इस मेले में मुख्य रूप से अदरख, कच्ची हल्दी, कुम्हड़ा के साथ ही मैदानी इलाकों के लोग पीठा, लड्डू, सूखी मछली समेत अन्य सामग्रियों की अदला-बदली करते हैं। इस मेले में जोनबिल (झील) में सामूहिक मछली पकड़ने की भी परंपरा निभाई जाएगी। मेला के आखिरी दिन ऐतिहासिक गोभा राजा का राज दरबार लगाया जाता है। जिसमें सभी जाति-जनजाति, धर्म के लोग हिस्सा लेते हैं।

2024 में जनता करेगी बदलाव : अखिलेश

भारत जोड़ो यात्रा के समापन समारोह में शामिल होने का फैसला पार्टी में विचार-विमर्श के बाद लेंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष व पूर्व सीएम अखिलेश यादव कांग्रेस के भारत जोड़ो यात्रा के समापन समारोह में शामिल होने का फैसला पार्टी के नेताओं से विचार विमर्श के बाद लेंगे। हालांकि वह लोकसभा चुनाव-2024 के लिए तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव (केसीआर) के साथ जाने को तैयार हैं। वह हैदराबाद में 18 जनवरी को केसीआर के नेतृत्व में होने वाली रैली में हिस्सा लेंगे।

केसीआर की रैली में 18 को लेंगे भाग

अखिलेश ने कहा कि 2024 में जनता परिवर्तन करेगी। वह पार्टी मुख्यालय में मीडियाकर्मियों से बात कर रहे थे। उन्होंने राष्ट्रीय युवा दिवस की बधाई देकर कहा कि हम सब संकल्प लेते हैं कि स्वामी विवेकानंद के बताए

रास्ते पर चलकर नफरत की राजनीति खत्म करेंगे। उन्होंने कहा कि काशी में लोग सीखने आते हैं। वह वैराग्य का स्थान है। सरकार वहां की सुंदरता खत्म कर रही है। नाव पर्यटन को तबाह किया जा रहा है। सपा सरकार की योजना थी कि नदियों की सफाई के लिए पहले नाले बंद किए जाएंगे। गोमती में काफी काम हुआ, लेकिन सरकार बदलते ही फिर से वह बदहाल हो गई है। जेपीएनआईसी को भी जांच के नाम पर लटकाया जा रहा है। अखिलेश ने सरकार से मांग की कि जोशीमठ के पीड़ितों को मुआवजा देकर उनका पुनर्वास किया जाए।

निकाय चुनाव पर कहा सिर्फ सुप्रीम कोर्ट पर भरोसा

अखिलेश ने निकाय चुनाव पर कहा कि उन्हें आयोग नहीं, बल्कि सुप्रीम कोर्ट पर भरोसा है। भाजपा हमेशा पिछड़ों और दलितों को बांटने का काम करती रही है। भाजपा सत्ता का दुरुपयोग कर संस्थानों के जरिए चिह्नित लोगों का उत्पीड़न कर रही है।

ट्विटर वार के बाद सपा ने बदली सोशल मीडिया टीम

सपा और भाजपा के बीच चले ट्विटर वार के बाद सपा ने अपनी सोशल मीडिया की टीम में बदलाव किया है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि भाषा के स्तर पर कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए, हमने अपनी टीम बदल दी है। कहा कि भाजपा को भी अपनी भाषा ठीक करनी चाहिए। मालूम रहे कि सपा मीडिया सेल का ट्विटर हैंडल संचालित करने वाले मनीष जगन अग्रवाल को पिछले दिनों गिरफ्तार कर लिया गया था। जगन के जमानत पर छूटने के बाद उन्हें मीडिया सेल में काम करने से मना कर दिया गया है। अब उनकी जगह नए लोगों को जिम्मेदारी दी गई है।

कानपुर में बदमाशों ने बुजुर्ग दंपत्ति की हत्या कर की लूटपाट

» छत के रास्ते घर में घुसे बदमाशों ने दिया घटना को अंजाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कानपुर। कानपुर में बिल्हौर के ककवन थाना क्षेत्र में डबल मर्डर और लूट की घटना सामने आई है। यहां गुरुवार देर रात बदमाशों ने एक निजी बिजली कर्मी के घर को निशाना बनाया। वहीं, घर के बुजुर्ग दंपती की हत्या कर नकदी और ज्वेलरी आदि सामान लूट ले गए।

मिली जानकारी के अनुसार, फत्तेपुर गांव निवासी निजी बिजली कर्मी राजकुमार के वृद्ध पिता छम्मीलाल, मां इमरती, उसकी पत्नी और बच्चे घर पर सोए हुए थे। वहीं, राजकुमार गांव के बाहर बने दूसरे घर में सोया हुआ था। देर रात छत के रास्ते से डकैत घर में घुस आए।

उन्होंने जेवर और नकदी का पता लगाने के लिए बिजली कर्मी के माता-पिता की गला रेत कर बेरहमी से हत्या कर दी। वहीं,

उसकी पत्नी और बच्चों को बांध कर डालने के बाद घर में रखा नकदी और जेवर लेकर फरार हो गए। घटना के बाद किसी तरह बंधनों से मुक्त होकर बिजली कर्मी की पत्नी ने घटना की सूचना दी। ग्रामीणों ने घटना की सूचना राजकुमार और पुलिस को दी। मौके पर पहुंची ककवन पुलिस ने घटना की जांच पड़ताल पड़ताल शुरू की है। वहीं डकैती के साथ डबल मर्डर से ग्रामीणों में दहशत फैल गई। सूचना पर बिल्हौर एसीपी अलोक सिंह सहित सर्किल का पूरा फोर्स भी मौके पर पहुंच है। वहीं घटना के तुरंत बाद ही डीसीपी विजय ढुल भी पहुंच गए।

दिल्ली पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र को लताड़ा

» पूछा, दिल्ली में चुनी हुई सरकार का क्या मतलब?

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अगर राजधानी का प्रशासन और नौकरशाहों पर केंद्र का नियंत्रण है तो दिल्ली में निर्वाचित सरकार होने से क्या उद्देश्य पूरा होगा। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से ये सवाल किया है।

केंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सीजेआई डी.वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ के समक्ष कहा कि दिल्ली जैसा केंद्र शासित प्रदेश, संघ का विस्तार है, जिसे संघ द्वारा अपने अधिकारियों के माध्यम से प्रशासित किया जाता है। सुप्रीम कोर्ट सिविल सेवकों के तबादलों और पोस्टिंग पर प्रशासनिक नियंत्रण के संबंध में दिल्ली सरकार और केंद्र के बीच मामले की सुनवाई कर रही है। शीर्ष अदालत अब 17 जनवरी को इस मामले में दलीलें सुनना जारी रखेगी। शीर्ष अदालत ने पिछले साल मई में दिल्ली में सेवाओं के नियंत्रण के मुद्दे को पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ के पास भेजा था।

पीठ जवाब से संतुष्ट नहीं

जस्टिस एमआर शाह, कृष्ण मुरारी, हेमा कोहली और पीएस नरसिम्हा की पीठ ने मेहता से सवाल किया, जब सब कुछ केंद्र के इशारे पर होता है, तब दिल्ली में निर्वाचित सरकार होने का क्या मतलब है? इस पर तुषार मेहता ने तर्क दिया कि हालांकि प्रशासक मंत्री के प्रति जवाबदेह है, अधिकारियों के संबंध में प्रशासनिक नियंत्रण केंद्र के पास निहित है।

केंद्र से किया सवाल

पीठ ने आगे सवाल किया कि यदि कोई अधिकारी अपने कार्य को ठीक से नहीं कर रहा है, तो दिल्ली सरकार की उस अधिकारी का तबादला कराने में क्या भूमिका है। मेहता ने कहा हम प्रशासनिक नियंत्रण में हैं जैसे कौन पोस्ट करता है, कौन ट्रांसफर करता है आदि। यह देखते हुए कि केंद्र के अनुसार, दिल्ली सरकार के पास शिक्षा, पर्यावरण आदि से संबंधित पदों पर तैनाती का कोई अधिकार नहीं है, तब शीर्ष अदालत ने मेहता से पूछा, क्या फायदा है? केंद्र ने इस बात पर जोर दिया कि दिल्ली के लिए ऐतिहासिक फ्रेमवर्क लाया गया था और यह मिनी भारत है।

जोशीमठ के साथ बहुगुणा नगर में भी गहराया संकट

» गहराता जा रहा है जोशीमठ पर खतरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड के जोशीमठ में हालात लगातार चिंताजनक बने हुए हैं। प्रभावित घरों की संख्या भी बढ़कर 760 हो गई है। अभी तक कुल 169 परिवारों को राहत शिविरों में विस्थापित किया जा चुका है। वहीं 43 प्रभावित परिवारों को डेढ़-डेढ़ लाख रुपये की मदद राशि भी आवंटित कर दी गई है। इस बीच इसरो की एक रिपोर्ट ने जोशीमठ के लोगों की टेंशन बढ़ा दी है। सैटेलाइट तस्वीरों के आधार पर इस रिपोर्ट में कहा गया है कि नरसिंह मंदिर समेत जोशीमठ का पूरा इलाका डूब सकता है। वहीं, नैनीताल हाई कोर्ट में जोशीमठ के भू-धंसाव मामले को लेकर सुनवाई हुई। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में जोशीमठ संकट को लेकर कैबिनेट की मीटिंग आज दोपहर को होगी।

760 हो गई प्रभावित घरों की संख्या

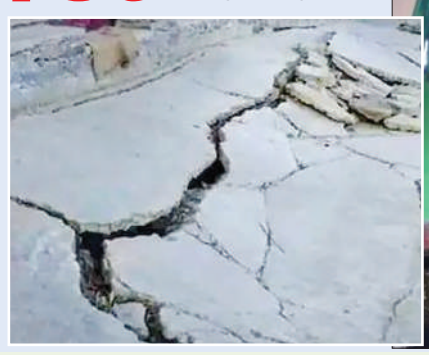

भू-धंसाव को लेकर दायर जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने आपदा प्रबंधन विशेषज्ञ डॉ. पीयूष रौतेला और डॉ. एमपीएस बिष्ट को सरकार की गठित विशेषज्ञ समिति में शामिल करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कमिटी को निर्देश दिया है कि वह दो महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में कोर्ट के सामने पेश करे। कोर्ट ने सरकार को उत्तराखंड के जोशीमठ में निर्माण पर लगी रोक को सख्ती से लागू करने का भी आदेश दिया है।

इस बीच चमोली जिले में जोशीमठ के बाद अभी कर्णप्रयाग पर भी खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। यहां भी घरों में दरारें आने के बाद प्रशासन ने बहुगुणा नगर को तुरंत खाली कराने का आदेश दिया है। दरअसल, चमोली जिले में हालात लगातार खराब होते जा रहे हैं। जोशीमठ के बाद कर्णप्रयाग में कई घरों में दरारें पड़ गई हैं। ऐसे में प्रशासन ने कर्णप्रयाग के बहुगुणानगर को तुरंत खाली कराने का आदेश दिया है। प्रशासन ने बहुगुणा नगर के लोगों को तुरंत पास के रेन बसेरों में शिफ्ट होने का नोटिस जारी किया है ताकि यहां भी किसी तरह की जनहानि न हो।

इसरो ने जारी की पहाड़ के संकट की सैटेलाइट तस्वीर

12 दिन में 5.4 सेमी धंसी जोशीमठ में जमीन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चमोली। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने जोशीमठ को लेकर चौंकाने वाला खुलासा किया है। इसरो की रिपोर्ट के अनुसार, जोशीमठ में सिर्फ 12 दिनों में 5.4 सेंटीमीटर जमीन धंस गई है। इसरो ने जोशीमठ की सैटेलाइट तस्वीरें भी जारी की हैं, जिनके मुताबिक, 27 दिसंबर से आठ जनवरी के बीच जोशीमठ की जमीन 5.4 सेंटीमीटर नीचे चली गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह घटना दो जनवरी, 2022 से शुरू हुई थी।

इसरो ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि अप्रैल से नवंबर 2022 के बीच जमीन धंसने की दर बहुत कम थी। इस दौरान जोशीमठ नौ सेंटीमीटर नीचे चला गया। इसरो ने कहा है कि क्राउन ऑफ द सब्सिडेंस 2180 मीटर की ऊंचाई पर जोशीमठ-औली रोड के पास स्थित है। इससे पता चला है कि जमीन धंसने से जोशीमठ-औली सड़क भी धंसने वाली है। कार्टोसैट-2 एस सैटेलाइट से ली गई तस्वीरों में इसरो ने जोशीमठ में सेना के हेलीपैड और नरसिंह मंदिर समेत पूरे शहर को संवेदनशील क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया है।

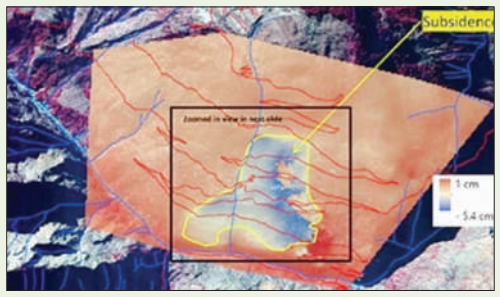

पूरी घाटी में हो रहा भू-धंसाव

आईआईआरएस ने जो वीडियो जारी किया है, उसमें यह भी दर्शाया गया कि भू-धंसाव केवल जोशीमठ शहर में ही नहीं हो रहा है। पूरी घाटी इसकी चपेट में है। आने वाले समय में इसके खतरनाक नतीजे देखने को मिल सकते हैं।

जोशीमठ में आ रहे भूगर्भीय बदलाव

रिपोर्ट में जोशीमठ व आसपास के क्षेत्र में आ रहे भूगर्भीय बदलाव को देखा गया। हाल ही में आईआईआरएस ने इसकी रिपोर्ट जारी की है। इसमें दावा किया गया कि जोशीमठ हर साल 6.62 सेमी. की दर से नीचे की ओर धंस रहा है। इसकी सेटेलाइट तस्वीर भी जारी की गई है। साथ ही आईआईआरएस ने एक वीडियो जारी किया है, जिसमें जोशीमठ के थ्री-डी बदलावों को दिखाया गया है।

हर साल 2.60 इंच धंस रहा जोशीमठ

इसरो के अलावा इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग (आईआईआरएस) ने भी एक रिपोर्ट सरकार को सौंपी है। इसके मुताबिक, जोशीमठ हर साल 6.62 सेंटीमीटर यानी करीब 2.60 इंच धंस रहा है। आईआईआरएस ने करीब दो साल की सैटेलाइट तस्वीरों का अध्ययन करने के बाद यह रिपोर्ट तैयार की है। आईआईआरएस देहरादून के वैज्ञानिकों ने जुलाई 2020 से मार्च 2022 के बीच जोशीमठ और आसपास के करीब छह किलोमीटर क्षेत्र की सेटेलाइट तस्वीरों का अध्ययन किया।

पीएम मोदी ने दिखाई गंगा विलास क्रूज को हरी झंडी

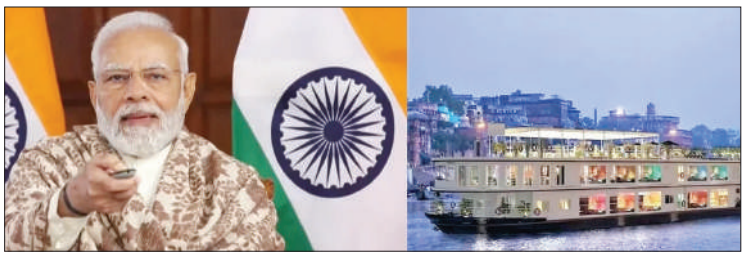

» वाराणसी से डिब्रूगढ़ तक गंगा में कर सकेंगे यात्रा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में टेंट सिटी का वर्चुअली उद्घाटन किया, इसी के साथ पीएम ने वाराणसी-डिबरुगढ़ के बीच यात्रा करने वाले रिवर क्रूज एमवी गंगा विलास को भी हरी झंडी दिखाई। केंद्रीय मंत्री एस सोनोवाल, यूपी के सीएम आदित्यनाथ लॉन्च इवेंट में मौजूद रहे। बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव और असम के सीएम एचबी सरमा वर्चुअली इवेंट में शामिल हुए ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लॉन्च के बाद कहा कि रिवर क्रूज गंगा विलास का शुभारंभ हो गया है। गंगा नदी हमारे लिए सिर्फ जलधारा नहीं है, बल्कि प्राचीन काल से तप-तपस्वियों की साक्षी है, मां गंगा ने भारतीयों को हमेशा पोषित किया है, प्रेरित किया है, गंगा पट्टी आजादी के बाद पिछड़ती चली गई, लाखों लोगों का पलायन हुआ, इस स्थिति को बदलना जरूरी था और हमने नई सोच के साथ काम करना शुरू किया।

विदेशी टूरिस्ट को पीएम का संदेश

प्रधानमंत्री ने कहा, कि यूपी, बिहार, असम, बंगाल और बांग्लादेश की यात्रा के दौरान यह क्रूज हर तरह की सुविधा मुहैया करवाएगा, मैं सभी विदेशी टूरिस्ट का विशेष अभिनंदन करता हूं जो पहले सफर पर निकलने वाले हैं, मैं कहूंगा कि भारत के पास वो सबकुछ है जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं, भारत की व्याख्या सिर्फ शब्दों में नहीं की जा सकती, हमें दिल से समझा सकता है।

प्रधानमंत्री का अर्थशास्त्रियों के साथ आगामी बजट पर नीति आयोग में मंथन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज नीति आयोग में अर्थशास्त्रियों के साथ की। इस बैठक के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी मौजूद रहीं। पीएम ने केंद्रीय बजट से पहले अर्थशास्त्रियों से राय और सुझाव लेने के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति और इसकी चुनौतियों का आकलन किया।

जानकारी के मुताबिक, संसद का बजट सत्र 31 जनवरी से शुरू हो सकता है। बजट सत्र छह अप्रैल तक चल सकता है। सत्र की शुरुआत लोकसभा और राज्यसभा के संयुक्त सत्र से होगी। इस दौरान राष्ट्रपति द्रौपदी मूर्मू दोनों सदनों को संबोधित करेंगी। यह उनका संसद के दोनों सदनों को पहला संबोधन होगा। जानकारी के मुताबिक, बजट सत्र के पहले दिन दोनों सदनों में इकोनॉमिक सर्वे को पेश किया जाएगा। इसके बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण संसद में केंद्रीय बजट पेश करेंगी। बजट एक फरवरी को पेश किया जा सकता है। सत्र का पहला भाग 10 फरवरी तक जारी रह सकता है। इसके बाद बजट सत्र का दूसरा भाग छह मार्च को शुरू होगा और यह 6 अप्रैल तक चल सकता है।

गुजरात में पंचायत चुनाव की तैयारी में जुटी कांग्रेस

» अब बीजेपी के गढ़ सेंध लगाकर करेगी पलटवार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अहमदाबाद। गुजरात विधानसभा चुनावों में 17 सीटों पर सिमटने के बाद अब कांग्रेस कोई कोताही बरतने के मूड में नहीं है। राज्य में अभी जिला पंचायत, तहसील पंचायत और नगर पालिकाओं के चुनावों की कोई हलचल शुरू नहीं हुई है लेकिन कांग्रेस ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है।

विधानसभा चुनावों में करारी शिकस्त के बाद कांग्रेस इन चुनावों में मजबूती दिखाना चाहती है। इसी के मद्देनजर कांग्रेस

के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश ठाकोर ने प्रदेश की जिन 71 स्थानों पर स्थानीय निकाय के चुनाव होने हैं। उनके प्रभारियों की नियुक्ति का काम शुरू कर दिया है। ठाकोर ने राजीव भवन में बैठक के कहा कि ये प्रभारी स्थानीय संगठन के साथ समन्वय बनाएंगे और इसके बाद उम्मीदवार के चयन प्रक्रिया की जाएगी। गुजरात विधानसभा चुनावों के बाद अब राज्य की 71 स्थानों पर लोकल चुनाव होने हैं।

मजबूती से लड़ेंगे चुनाव

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जगदीश ठाकोर ने कहा कि नगर पालिकाओं में प्रत्येक फ्रंटल, सेल और डिपार्टमेंट और स्थानीय संगठन के साथ प्रभारी संपर्क में रहेंगे। वे इस चुनाव में बेहतर उम्मीदवार के चयन के साथ आने वाले हाथ से हाथ जोड़ों अभियान के बेहतर क्रियान्वयन के लिए भी काम करेंगे।

शरद यादव के निधन पर राजनीतिक जगत में छाया शोक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव के निधन पर राजनीतिक जगत में शोक की लहर है। उनके देहांत पर पीएम नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, गृह मंत्री अमित शाह, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, सपा मुखिया अखिलेश यादव, बसपा प्रमुख मायावती पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, एनसीपी सुप्रीमो शरद पवार, बिहार के सीएम नीतीश कुमार समेत तमाम दलों के नेताओं ने दुख जताया।

"शरद यादव के निधन से बहुत दुख हुआ। अपने लंबे सार्वजनिक जीवन में उन्होंने खुद को सांसद और मंत्री के रूप में प्रतिष्ठित किया। वे डॉ. लोहिया के आदर्शों से काफी प्रभावित थे। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति संवेदनाएं। -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

"मैंने शरद यादव जी से राजनीति के बारे में बहुत कुछ सीखा है, वह आज हमारे बीच नहीं रहे तो काफी दुःख हो रहा है। उन्होंने कभी अपना सम्मान नहीं खोया, जबकि राजनीति में सम्मान खोना बहुत आसान होता है। -राहुल गांधी, वरिष्ठ कांग्रेस नेता

"महान समाजवादी नेता आदरणीय श्री शरद यादव जी का निधन अत्यंत हृदय विदारक है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें। -अखिलेश यादव, सपा प्रमुख

"सिंगापुर में रात्रि के समय शरद भाई के जाने का दुखद समाचार मिला। बहुत बेबस महसूस कर रहा हूँ। आने से पहले मुलाकात हुई थी और कितना कुछ हमने सोचा था समाजवादी व सामाजिक न्याय की धारा के संदर्भ में। -लालू प्रसाद यादव, राजद प्रमुख

"देश की समाजवादी धारा के वरिष्ठ नेता, जेडीयू के पूर्व अध्यक्ष शरद यादव के निधन से दुःखी हूं। एक पूर्व केंद्रीय मंत्री व दशकों तक एक उत्कृष्ट सांसद के तौर पर देश सेवा का कार्य कर उन्होंने समानता की राजनीति को मजबूत किया। उनके परिवार को मेरी गहरी संवेदनाएं। -मल्लिकार्जुन खरगे, अध्यक्ष कांग्रेस

"पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं देश के बड़े वरिष्ठ नेता शरद यादव के निधन से मुझे गहरी वेदना की अनुभूति हुई है। अपने लंबे राजनीतिक जीवन में उन्होंने हमेशा समाज के कमजोर वर्गों की समस्याओं को पुरजोर तरीके से उठाया। उनके निधन से भारतीय राजनीति की एक प्रभावी आवाज खामोश हो गई है। शरदजी का निधन एक बड़ी क्षति है। दुःख की इस घड़ी में मैं शोकाकुल परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं। - राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

"पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव के निधन से दुखी हूं। शरद यादव के साथ मेरा बहुत गहरा रिश्ता था। उनके निधन की खबर से स्तब्ध और दुखी हूं। वे एक प्रखर समाजवादी नेता थे। उनका निधन सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र के लिए अपूरणीय है। नीतीश कुमार, सीएम बिहार

"शरद यादव का निधन भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। उनके निधन पर उनके परिवार और अनुयायियों को संवेदनाएं। भगवान उनकी आत्मा को शांति दें। - शरद पवार, अध्यक्ष एनसीपी

"श्री शरद यादव के निधन के बारे में सुनकर मुझे दुख हुआ है। एक दिग्गज राजनेता और बेहद सम्मानित सहयोगी, उनकी विरासत जीवित रहेगी। मैं प्रार्थना करती हूं कि उनके परिवार और अनुयायियों को दुख की इस घड़ी में धैर्य और शक्ति मिले। -ममता बनर्जी, सीएम बंगाल

"देश की राजनीति में जाना-पहचाना नाम व चेहरा तथा काफी लम्बे समय तक संसद के दोनों सदन के सदस्य व पूर्व मंत्री रहे श्री शरद यादव जी के निधन की खबर अति-दुखद। उनके परिवार व सभी चाहने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदना। कुदरत उन सब को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे। -मायावती, बसपा प्रमुख

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website**: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।